चतुर्थ अध्याय–

गली आगे मुड़ती है, का शिल्पविधान–

1. कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र–चित्रण
3. कथोपकथन। संवाद
4. वातावरण
5. भाषाशैली
6. उद्‌देश्य

– चतुर्थ अध्याय –

गली आगे मुडती है का शिल्पविधान

1) **कथावस्तु**

रिचार्डस् ने कथावस्तु को महत्व दिया है। कुछ आलोचक इस तत्व को महत्व नहीं देते हैं। उसमें शेरबुड एंडरसन ने कथानक को कहानी का विष कहा है। तो प्रसिद्ध आलोचक श्री विवान का कथन है – "आप को यह बात चाहे अच्छी लगे या बुरी मै – "कथावस्तु" इस शब्द को यह आशा करके कि, यह डूबा जाएगा और फिर नहीं उभरेगा सीधे सागर में फेक देना चाहूँगा। --- संज्ञा के रुप में यह साधारण तथा न कम न अधिक मात्रा में कहानी समझा जाता है, या रुपरेखा माना जाता है। इसका क्रिया रुप में प्रयोग आकर या विधी के अर्थ में होता है। अनिश्चितता से मुझे घृणा है। अंतः में 'प्लाट' शब्द का संज्ञा वाचक रुप के लिए और क्रियावाचक के लिए रचना शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ।[1]" आलोचकों के मतानुसार कथानक के आदि, मध्य और अंत की कोई निश्चित पूर्वनियोजित योजना की आवश्यकता नहीं है। किसी उपन्यास के लिए एक कथा नहीं होती उसे छोटी छोटी कथाएँ जुडी हुई होती हैं। जिन्हें अंत मे एक सूत्र में बाँधा जाता है, और कथानक पूरा होता है।

उपन्यास का कथानक अपने रचनाविन्यास और संगठन में विशिष्ट होता है। उपन्यास की कथावस्तु एक कला है कथावस्तु के द्वारा घटनाओं का सुनियोजित और सुव्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया जाता है। उपन्यास का कथानक अपनी संरचना और संयोजन में एक कलात्मक प्रक्रिया है। इसके मूल में घटनाएँ अनगिनत और सीमित रुपों में प्रवाहित रहती है। उपन्यासकार अनुक्रम में इसका संगठन करता है। वह जिज्ञासा के साथ-साथ जीवन मूल्यों का प्रक्षेपण घटनाओं की व्याख्या और आलोचना भी करता है। आज जो उपन्यास लिखे जा रहे हैं उसमे कथानक का परंपरित रुप आदि, मध्य अंत आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इसमें यह भी जरुरी नहीं माना जाता कि कथा को चरमोन्नत अवस्था तक पहुंचाया जाये और इसके लिए समस्त अंतर्दशाएँ, घटनाएँ एवं विभिन्न भामेकाएँ क्रमपुर्वक नियोजीत की जाए। अब उपन्यास की कथावस्तु को कहीं पर से भी शुरु किया जा सकता है। "शेखर एक जीवनी" की कथा मध्य से आरंभ की गयी है, आज उपन्यासों की कथाओं में –हास की स्थितीयों उत्पन्न हो चुकी है। आज मानवी जीवन की जटिलता, अव्यवस्था, विसंगति की दशा में उपन्यासों की कथाओं में

व्यवस्था, सुसंबद्ध घटनाओं का तारतम्य खोजना अयोग्य लगता है। फिर भी यह तो निश्चित रुप से कहा जा सकता है कि, "आज भी रमेश उपाध्याय और रमेश बक्षी की "एन्टी नावेल्स" में भी कथानक का कोई-न-कोई रुप और आकार उपलब्ध है।"[2]

"गली आगे मुडती है" इस उपन्यास में युवाछात्र आंदोलन चित्रित किया है। आज युवा आक्रोश पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है। युवा-आक्रोश से देश के राजनेता, समाजशास्त्री और शिक्षा विद सभी चिंतित है। इस युवा आक्रोश को छात्र असंतोष या "छात्रशांति" का गलत नाम दे दिया जाता है। वस्तुतः यह समस्या का संक्षेपीकरण है, सरलीकरण भी। युवा आक्रोश पुरे युवा समाज में फैली वस्तु है और उसे ठिक से सामने के अभाव में न तो उसका सही निदान हो रहा है, और न ही उसे सही दिशा देने की कोई सार्थक कोशिश युवा छात्र एक शक्ति है, आनेवाले देश का भविष्य उनके हाथ में है उसे बिगाडना या विकसीत करना युवाछात्रों के हाथ मे है। अगर युवाछात्र असंतुष्ट होंगे या उनमें संघर्ष होगा तो उस असंतोष को खोजना चाहिए और उसे सुधार लेना चाहिए और उसे सुधार लेना चाहिए उसके लिए साहित्य हमें साहयक होता है।

इस उपन्यास में काशी शहर का चित्रण आया है। एक प्रमुख कथा के साथ अनेक छोटी-मोठी कथाएँ जुडी हुओ है। रामतिवारी की प्रमुख कथा है। उससे किरण, हरिमंगल, रमेश रज्जो, आदि की कथाएँ जुडी हुओ है। राम तिवारी संस्कृत का छात्र है वह प्रा. सुबोध भट्टाचार्य के निर्देशन में पीएच्.डी. के लिए शोधप्रबंध लिख रहा है। रामानंद तिवारी समाज में होनेवाले अत्याचार और भ्रष्टाचार को मिटाना चाहता है। मगर उसके संस्कार और उसका कमजोर मन उसे बदलते नहीं देते। तिवारी देबू और रमेंद्र जैसे राजनीति में नही कूद सकता। तिवारी के पिता उनसे अलग रहते हैं, इसलिए माँ और बहन आरती की जिम्मेदारी उसपर है। "राजेश्वरी मठ" में वह किराये पर रहता है। उसकी आर्थिक दशा बहुत कमजोर है। इसलिए वह प्रा.सुबोध भट्टाचार्य के कहने पर वल्लभचंद्र की बेटी किरण को पढाने का काम करता है। प्रा. सुबोध भट्टाचार्यजी अच्छे अध्यापक है। उन्हें विश्वविद्यालयों में चलनेवाला भ्रष्टाचार अच्छा नहीं लगता वे इसके खिलाफ है। रामानंद तिवारी उनका अच्छा छात्र है। सन 1947 में बंगाल दो

हिस्सो में बट गया और शताब्दियों से मिल जुलकर रहनेवाले हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये। उसी विभाजन में उनके माता – पिता और बहन चल बसे। सुबोधजी अकेले रह गये जो अपने मामा-मामी के साथ रहते थे।

रामानंद तिवारी जयंती से प्रेम करता है, लेकिन किरण को बहुत चाहता है। तिवारी धरती पर अपने पॉव रखकर नहीं चल सका आकाश के तारों की ओर देख रहा था। परिणामतः उन्हें निराश होना पडा। उसका सपना था छात्रवृत्ति के सहारे पी.एच्.डी. करेंगे और किसी कॉलेज में नोकरी करेंगे। अपनी एक सुशील पत्नी होगी और मैं सपत्नीक अपने माँ के साथ सूख से रहूँगा। आरती की शादी भी करनी थी मगर दुर्भाग्य से आरती ने माथुर जैसे आदमी से शादी कर ली जो पहले से ही शादीशुदा है। रामानंद अपनी निजी जीवन में असफल बना है। अपने जीवन में दुःखों के थपेटें सहते-सहते अंत में वह निराश होकर जीवन के नये रास्ते पर चलने का निश्चय करके घर छोडकर चल पडता है। रामानंद तिवारी ज्ञानी और विद्वान ही है जो संस्कृत पढ रहा है और पढा रहा है। वह गणेश तिवारी के वंशज है उन्हें अपने वंश पर नाज है। उसके कओी दोस्त हैं उनमें देबू, रमेंद्र, श्रीकान्त, नंदकिशोर सभी स्तर और जाति के दोस्त हैं। सभी के विचार-आचारों से अलग गलग हैं, मगर सबको चाहनेवाला और तोडनेवाला एकमात्र रामानंद है। उसकी रजुल्लो जैसे गुंडों के साथ भी दोस्ती है। वह गुंडों में भी सच्चा इन्सान होता है ऐसा मानता है। हरिमंगल एक ऐसा दोस्त और व्यक्ति है जो गैरकानूनी धंदों को नष्ट करके ऐसे गैरकानूनी लोगों को मिटाना चाहता है। हरिमंगल शेर की तरह रहता हैं और उसी की तरह मरता है। वह सच्चाई और नेकी के रास्तेपर चलनेवाला इन्सान है, जिसे अफसर ने झूठा इल्जाम लगाकर नोकरी से निकल दिया है। छात्र आंदोलन का फायदा उठाकर किसी दुश्मन ने उसे मारने की कोशिश की। जमुनादास कृष्ण भक्त है जो तिवारी का दोस्त है, जमुनादास अपने जीपन में हारा हुआ दुःखी व्यक्ति है। अपने पिता पर रुठकर घर छोडकर रामकली के पिता के साथ वह रहता है रामकली से उसकी शादी हो जाती है, वह बहुत खुश होता है लेकिन वह खुशी जादा दिनों तक नही टिक पाती है। पहला बच्चा जनते वक्त रामकली मर जाती है, इससे जमुनादास की दुनिया अंधःकारमयी होती है। सबकुछ छोडकर रामभक्ति में वह लीन होता है।

रामानंद की बहन आरती माथुर के साथ भाग जाती है और शादी कर लेती है। इससे माँ और तिवारी को बडा दुःख होता है। आरती को खोजते समय तिवारी की बक्कडगुरु से पहचान होती है। जो अनेक नामों से प्रसिद्ध है। फिलाडेल्फिया होटल में गैरकानूनी धंदे वहाँ चलता है। शोभना उसकी पत्नी है वह तिवारी को बक्कड से बचाना चाहती है। तिवारी उसे बहन के रुप में अपनाता है। रक्षाबंधन के दिन राखी बाँध लेता है। उसके दुःखों में शामील होकर उसके दुःखों को कम करने का प्रयास करता है। तिवारी हर बात का कारण खोजनेवाला व्यक्ति है इसीकारण वह अनेक अच्छे बुरे लोगों के साथ दोस्ती करता है। उन्होंने अच्छे और बुरे दिन भी देखे है। बक्कडगुरु ने हरिमंगल को मार डाला क्यों कि हरिमंगल इन्स्पेक्टर की साहयता से उनकी पोल खोल देता है। हरिमंगल लज्जो से प्रभावित हुए है लज्जो अपने आप को खतरे में डालकर हरिमंगल की साहयता करती है जख्मी हालत में उनकी सेवा भी करती है। लाजो मामूली औरत है फिर भी वह उँची बातें करती है उसके विचार महान लगते हैं। हरिमंगल उसपर प्रभावित होकर कहता है – "तूने आज ऐसी बात कह दी कि, मेरी अंतरात्मा खिल गयी। तू सचमुच महान है, लाजो द ग्रेट।"[3]

हरिमंगल की मृत्यु के बाद उसके द्वारा मिली चिठठी पढता है तब वह बहुत दुःखी होता है। वह सोचता है बक्कडगुरु की जानकारी अगर मैंने हरिमंगल को दी होती तो वह बच सकता, मगर वह अपनी इज्जत और आरती की बात को सबके सामने लाकर उनके नजरों से अपने आप को गिराना नहीं चाहता था। उसका डरपोक मन उसे कुछ करने या कहने नहीं देता। अब वह अपने आपको कोसता है। हरिमंगल अपना बलिदान देकर सभी गैंग को खत्म करता है, जिसका उसने कसम खायी थी वह पूरी कर देता है। ऐसे लोग बहुत कम होते हैं जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं।

इस उपन्यास में हिंदी भाषा आंदोलन को भी चित्रित किया है। अंग्रेजी हटाओ हिंदी को अपनाओं की मांग छात्रोंद्वारा की गयी है। छात्र समझते हैं कि, जो कुछ हमें चाहिए वह आंदोलन से मिलेगा। छात्र शक्ति बडी है और वे अपने हक्कों के लिए संघर्ष और आंदोलन करना चाहते हों लेकिन हमारी सरकार उन्हें गलत मानती है। इससे छात्रों पर गलत इल्जाम लगाये जाते हैं आंदोलन पर काबू पाने के लिए उन्हे गिरफ्तार किया जाता है। गोलियों का वर्षाव किया जाता है। छात्रों का आंदोलन सही

दिशा से न होने के कारण वे असफल होते हैं। राजनितिज्ञों की हेराफेरी से अंत में आंदोलन रुक जाता है और छात्र राजनेता के स्वार्थ का शिकार बनता है।

तिवारी उपन्यास में शुरु से अंत तक सभी कथाओं में संम्मिलित है। उसे छात्रों की आंदोलन की दिशा मंजूर नहीं है। वह हिंसक आंदोलन का विरोधी है। अंत में वह आंदोलन से दूर चला जाता है। किरण की शादी अन्य किसी के साथ हो जाती है। जयंती की भी शादी हो जाती है। जीवन में सभी पथ पर हारा हुआ रामानंद नयी जिंदगी की खोज में चल पडता है।

उपन्यास का अंत दुःखांत है, असफल नायक, असफल छात्रआंदोलन आदि के कारण उपन्यास का अंत पाठक के मन को छू जाता है और रामानंद के बारे में पाठकों के मन में सहानभूति पैदा होती है।

<u>निष्कर्ष</u> –

उपन्यास की सफलता में कथावस्तु महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है। कथा के बिना उपन्यास पूरा नहीं हो सकता है। कथा की रोचकता से पाठक को पढने में रुचि आती है। "गली आगे मुडती है" में में मुख्य कथा के साथ अन्य कअी कथाएँ भी जुडी हुअी हैं। रामानंद की कथा मुख्य कथा है, जो अंत तक चली रहती है। आलोच्च उपन्यास की कथाएँ वास्तविक हैं। जिससे वातावरण निर्मिती में सहायता मिली है। इस उपन्यास में एक ही धारावाही कथा नहीं है। इसमें तिवारी की प्रमुख कथा के साथ साथ किरण, हरिमंगल, रमेश, रज्जो, बक्कडगुरु आदि की कथाएँ जुडी हुअी हैं। इन सभी गौण कथानकों को एक धागे में पीरोकर मुख्य कथा को आगे बढानेवाला "गली आगे मुडती है" यह उपन्यास कथावस्तु की दृष्टि से एक अच्छा नया प्रयोग लगता है। साठोत्तरी कालखंड में उपन्यास शिल्प में काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। कथावस्तु की दृष्टि से यह उपन्यास एक अच्छा और नया प्रयोग लगता है। इस उपन्यास में लेखक ने सामाजिक समस्याओं को रामानंद द्वारा लोगों के सामने रखा है। छात्र आंदोलन को ज्यादा महत्वपूर्ण स्थान दिया है। संपूर्ण कथा वास्तविकता के नजदीक है। पाठक अपने नीजी जीवन की झलक उसमें देखते है। इसतरह "गली आगे मुडती है" की कथा वस्तु सफल बनी है।

2) **पात्र और चरित्र चित्रण –**

उपन्यासकार समाज का जीवंत या विशिष्ठ सदस्य होता है। वह समाज में फैले विविध मानव चरित्रों को अपनी रचना में स्थान देता है। उपन्यासकार जिन पात्रों का चित्रण करता है वे समाज के ही अंग होते हैं। पाठक भी अपने आसपास विचरनेवाले पात्रों को ही चाहता है। समाज से मेल न खानेवाले पात्रों को ही चाहता है। समाज से मेल न खानेवाले पात्रों के प्रति पाठकों की रुचि नहीं होती है। इन पात्रों के क्रियाकलाप, उनकी समस्याएँ पाठक को अपने क्रियाकलाप एवं समास्याएँ लगती है। इस हालत में उपन्यास में चित्रित पात्र गहराई के साथ समाज जीवन से या पाठकों से संप्रवृत्त हो सकते है। युग सापेक्ष एवं परिवेश सापेक्ष पात्रों का निर्माण लेखक करता है। लेखक पाठकों की परिवर्तीत चेतना के अनुकूल पात्रों का निर्माण करता है। उपन्यास में सपाट चरित्र के पात्र, जटिलचरित्र के पात्र, प्रभावी चरित्र के पात्र, अप्रभावी चरित्र के पात्र, सरल एवं गूढ चरित्र के पात्र, स्थिर एवं गतिशील पात्र, प्रतिनिधी और व्यक्तिवादी पात्र आदि कअी प्रकार के पात्रों का समावेश किया जाता है। साठोत्तरी कालखंड में पात्रचरित्र चित्रण में अनेक नये-नये प्रयोग देखने को मिल रहे है। कभी-कभी एकाध उपन्यास में वहाँ का भूखंड ही नायक की भूमिका निभाता है और पात्र केवल नाममात्र वहाँ उपस्थित रहते हैं। आंचलिक उपन्यास इसी कोटि में आते हैं।[4]"

उपन्यास का मुख्य विषय भी मानव जीवन ही है। मानव जीवन का अर्थ है मनुष्य का सामाजिक जीवन, जिसकी यथार्थ समस्याओं का अंकन किसी पात्रविशेष के माध्यम से सर्वसामान्य को परिचित करना वर्तमान उपन्यास की प्रक्रिया विशेष है। हेन्री जेम्स ने सत्य ही लिखा है कि, उपन्यास के अस्तित्व का एकमात्र कारण यह है कि वह जीवन के चित्रण का प्रयास करता है। उपन्यासों में कथावस्तु के साथ साथ भली प्रकार से चित्रित पात्रों का होना भी अनिवार्य है। ये पात्र कृत्रिम न लगे वास्तविकता को उजागर करे। यथार्थ पात्र तब होंगे जब वे परिस्थितियों के अनुकूल एवं जीते जागते रहे, वातावरण यथार्थ तब होगा, जब वह पात्र को पूर्णतया प्रकट करने में सफल हो और शैली यथार्थ तब होगी जब वह वातावरण के अनुसार जीनेवाले पात्र की दशा के अनुरुप हो। उपन्यास में पात्र का व्यक्तित्व वही हो जो जीवन में होता है। उसीतरह उस पात्र को पाठक के संम्मुख रखना होगा। "गली आगे मुडती है" के पात्र इसी कसौटी पर पूरे उतरते हैं।

"गली आगे मुडती है" में जो पात्र हैं, वे पारिवारिक और सामाजिक विषयों के साथ जुडे हुए है। इस उपन्यास का नायक रामानंद तिवारी के पारिवारिक स्थिति को वास्तविक के साथ चित्रित किया है। उसकी माँ और बहन आरती की भी मानसिक स्थिति का चित्रण यहाँ किया है। पिता अलग रहे हैं, और उसीसमय परिवार को अनेक समस्याओ से जुझना पडता है। तिवारी को अपनी शिक्षा को छोडकर घर की जिम्मेदारी उठानी पड रही है, रहने को घर नहीं है, आरती की शादी की चिंता आदि समस्या से वह परिवार ग्रस्त है। किराये के कारण तिवारी को पुजारी से झगडा करना पडता है। "चलो बबुआजी मैं महापतित और लुच्चा ही हूँ। हमारा किराया दो और हमारा घर खाली करो तुम लोग। ऐसे किरायदारों से बाज आये।[5]" लेखक ने पात्रों का स्वभाव विचारों का दर्जा समझ लिया है और उसीतरह पात्रों का चित्रण भी किया है। सुबोध भट्टाचार्य सच को किसी भी हालत में अपनाना चाहते हैं। समय आने पर व सच के लिए हरिचंद्र की तरह रास्तेपर आने के लिए तैयार है। पात्रों के चरित्र चित्रण उस पात्र का विचार, रहन सहन जिन माहोल में रहा है, उसे पाठक समझ सकते हैं। हरिमंगल देश में चले गैरकानूनी धंदों को रुकवाना चाहता है।

इस उपन्यास में रामानंद तिवारी, हरिमंगल, छात्र संघटन के छात्र, आरती, किरण, बक्कडगुरु आदि महत्वपूर्ण पात्र हैं। अन्य कुछ पात्र हैं, जो कथावस्तु में ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं हैं। शोभना जो बक्कडगुरु की पत्नी है। रमेंद्र, पुजारी, रजुल्ली, जमुना आदि पात्र महत्वपूर्ण नहीं लगते। उपन्यास मे पात्रोंका बाहुल्य है, जिससे पाठक को पात्र ध्यान मे रखने में दिकते आती है। कुछ पात्र ग्रामीण स्तर पर चित्रित किये हैं, उनके बोलने का ढंग निराला है। लाजो अज्ञानी है, दिल की सच्ची है, वह हरिमंगल से प्रेम करती है, उसके लिए वह अपनी जान खतरे में डालती है। उनका मन भोला है, मन गंगा जल की तरह स्वच्छ है, मन में किसी प्रकार की खोट नहीं है। वह कहती है – "तू जाने कब से उखडे–उखडे लगते रहे बाबू, पर हम ई सोच नहीं पाये कि, तोहरे मन में कौनो संका है। तू लोग हमार जान बचाय रहे, ओंक–रे बदले में हम तोहार नुकसान करा दे, अइसी ओछी कमीनी लाजो नहीं है बाबू।।[6]" लाजो के चित्रण से स्पष्ट होता है कि, वह सचमुच हरिमंगलपर प्रेम करती है, उनपर उसका विश्वास है। इस उपन्यास के कुछ महत्वपूर्ण पात्र –

[1] रामानंद तिवारी.

रामानंद तिवारी सुबोध भट्टाचार्यजी के निर्देशन में पी.एच्.डी. के लिए शोधप्रबंध लिख रहा है। पिता की गैरहजेरी के कारण घर की सारी जिम्मेदारी रामानंद पर आयी है। छात्रवृत्ति न मिलने पर उसकी आर्थिक दशा कमजोर बन गयी है। अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए वह किरण को पढा रहा है। उसे पढाते–पढाते स्वयंम उससे प्रेम करने लगता है। आरती रामानंद की बहन है, जो कॉलेज में पढ रही है। सहेली के माध्यम से उसका परिचय माथुर के साथ होता है। यह परिचय प्रेम में परिणित होता है और अंत में वे दोनों शादी कर लेते हैं। रामानंद ऐसा पात्र है जिसे हर समस्या को मुँह देना पडता है। अपने निजी जीवन से वह तंग आ चुका है। बेकारी ने भी उसे तंग किया है। उसका तकदीर उसे कहीं भी साथ नहीं देता है। संसार के सभी दुःख उसकी राह में दीवार बन चुके है। जिससे वह कुछ कर नहीं पाता सिर्फ देख रहा है, महसूस कर रहा है।

विश्वविद्यालयों में हिंदी प्रसारक छात्र आंदोलन कर रहे हैं। उसमें तिवारी हिस्सा लेता है, लेकिन संसार के इन जंजालों से उसे मुक्ति नहीं मिलती है। इसीकारण आंदोलन में अपने आपको पूर्णरुप से झकझोर नहीं दे सकता। रामानंद सभी लोगों पर अपना प्रभाव डालता है। उसका व्यक्तित्व अलग ढंग का है। बक्कडगुरु जैसा गैरकानूनी काम करनेवाला आदमी भी रामानंद से प्रभावित होता है। उसकी पत्नी शोभना उसे अपना भाई मान लेती है। हरिमंगल तिवारी को वह सबसे अपने नजदीकका समझता है। माथुर के साथ शादी करने पर रामानंद आरतीपर क्रोधित होता है। फिर भी वह आरती से प्रेम करता है इसलिए रज्जो से आरती की हालत सुनकर उसे मिलने चला जाता है।

रामानंद को शिवप्रसादजी ने नवचेतना संपन्न प्रतिभाशाली छात्र के रुप में प्रस्तुत करके संस्कृत के छात्र के रुप में प्रस्तुत करके संस्कृत के छात्र के प्रचलित बिम्ब को तोडा है। संस्कृत के सामान्य छात्रों की तरह वह पोंगा नहीं प्रेमिक है। नई चेतना और नयी दृष्टि से संपन्न युवक है। उसकी आँखों में चुम्बकीय शक्ति है, उसमें शारीरिक आकर्षण भी है। फिर भी वह सामाजिक विसंगती के साथ जूझ नहीं सकता। नीती जीवन के संघर्षों के साथ प्रोफेसरों के अपने मनमुराव के कारण वह एक प्रोफेसर की कोपदृष्टि का शिकार बन जाता है। प्रथम स्थान की जगह उसे तृतीय स्थान मिलता है उसके पी.एच्.डी. के सपने चूर – चूर हो जाते हैं। फिर भी नागर साहब की बेटी की टयूशन करते करते वह अनेक समस्याओं के साथ टकराता है। मठ के धूर्त पुजारी से टकराता है। हरिजन छात्र नंदकिशोर

की बहन के साथ होनेवाले बलात्कार के प्रश्न से टकराता है, आरती की समस्या पर "पाश" हॉटल में चलनेवाले गुप्त व्यापारों का साक्षात्कार होने पर अपने आप को खतरे में डालता है।

आत्मभीरु रामानंद परिवर्तन के लिए जोखिम उठाना नहीं चाहता, वह अनिश्चयवादी मानसिकता से घिरा हुआ नजर आता है, वह परिवर्तन की आकांक्षा रखते हुए भी विद्रोही मानस को तलाशना चाहता है। वह स्थितियों के साथ संघर्ष करते-करते संधि करने को तैय्यार हो जाता है। अतीव वैचारिक शक्ति के होते हुए भी उसकी स्थिति आंधी में उडते हुए तिनके की भाँति एक अलग शक्ल की बनती है। वह आंदोलन में होनेवाली तोड-फोड का, लूट-मार का विरोध करता है, सुबोध भट्टाचार्यजी को छात्र-संघठन द्वारा घिराव डालना उसे पसंद नहीं लगता। वह इस आंदोलन का गलत रास्तेपर चला आंदोलन मानता है। वह छात्रों की गलत नीति पर व्यंग करता है। वह युवा छात्र आंदोलन को गलत मानता है। यहाँ रामानंद तिवारी में हमें लेखक का प्रतिरुप दिखाई देता है। आधुनिक काशी ने रामानंद को उचित योग्यता के होते हुए भी असहाय और निरीह बनाया। रामानंद की असफलता उसके जीवन का अभिशाप लगता है। रामानंद अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के रास्ते की केवल तलाश कर रहा है परंतु सही रास्ता पा नहीं सकता है। रामानंद सबका होकर भी, उपन्यास में हर जगह मौजुद रहकर भी अंत में किसी का या कहीं का नही रहता। रामानंद किरण से प्रेम करता है, मगर शादी नहीं कर सकता अंत तक दुःखो ने उसका पिछा नहीं छोडा। हरिमंगल के मरने के बाद वह और भी टूट जाता है। सबको छोडकर अंत में अकेला इस माहौल से निकल पडता है अपना तकदीर खोजने के लिए। वह उपन्यास की कथानक का प्रमुख पात्र है जो शुरु से अंत तक कथानक मौजुद रहता है। हर घटना में उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहुलाओं के दर्शन होते है। "रामानंद की आवश्यकता से अधिक उपस्थिति खलती है और मनुष्य की सीमाओं के तहत संभाव्यता का प्रश्न उठाती है। यह लेखक की रामानंद के प्रति मोहग्रस्तता ही थी। जिससे उसे उपन्यास का सबकुछ बनाना चाहा था।"[7]

2) किरण

वल्लभचंद्र की बेटी किरण को तिवारी पढाने जाता है। उसे किरण के स्वभाव में निरालापन दिखाई पडता है। वह देखने में सुन्दर है उसकी आँखे बडी बडी सुती हुई नासिका। चेहरे पर एक अजीब

किस्म की गंभीरता जो अस्वाभाविक नहीं थी। किरण के इस चित्रण से उसकी छबी पाठक के सामने खडी होती है। उसे संस्कृत का भय लगता है, वह संस्कृत से दूर भागना चाहती है, मगर तिवारी के निर्देशन से उसे संस्कृत से प्रेम हो गया। किरण तिवारी से प्रेम करने लगती है। वह तिवारी से शादी करना चाहती है। अपने माता-पिता से कहती है कि, रामानंद अच्छा लडका है, अपने शादी के लिए उसे मानती हैं। रामानंद के साथ सैर करने चली जाती है। वह साहसी लडकी है, जो बात तिवारी नहीं कर साकता वह किरण करती है। किरण अपनी छोटी बहन कौमुदी से बहुत प्रेम करती है, इसलिए जब पिताद्वारा कौमुदी की याद दिलायी जाती है। रामानंद से शादी करने की बात को छोड देती है। अपने बहन के लिए प्यार को हमेशा के लिए त्यागकर पिता जिसके साथ शादी करवाना चाहते हैं, उसके लिए "हाँ" कर देती है। किरण सच्ची प्रेयसी भी है, उसके साथ आदर्श बेटी जो अपने पिता के दुःखो को समझकर अपने सुखों को त्याग देती है। किरण के चरित्र – चित्रण में उसकी छोटी – छोटी बातों को भी लेखक ने नहीं छोडा है। परिणाम स्वरुप किरण के विचारों को उसके रहन – सहन एवं सुंदरता आदि को पाठक सही तरीके से समझ सकते हैं।

3) <u>सुबोध भट्टाचार्य</u>

सुबोध भट्टाचार्य प्रोफेसर हैं, और रामानंद के निर्देशक भी हैं। वे शिक्षा जैसे पवित्र कार्य को राजनीति से अलग रखते है इसलिए उनकी बातें किसी को पसंद नहीं आती है। कॉलेज के लडके उनपर आरोप करते हैं फिर भी वे अपने बात पर स्थिर रहते है। वे सच्चाई को अंत तक नहीं छोडते। वे तिवारी को अन्य अध्यापक के निर्देशन के रुप में लेने के लिए कहते है क्यों कि, सुबोधजी का छात्र होने के नाते छात्रवृत्ति नहीं मिलती, इसीकारण सुबोधजी दुःखी होते है। वे रामानंद को किरण की टयुशन लेने के लिए कहते हैं ताँकि रामानंद की आर्थिक स्थिति सुधारने में साहयता मिलेगी। छात्र रामानंद को यू.जी.सी. स्कॉलरशिप न मिलने के कारण भट्टाचार्यजी अपने आप को दोषी मानते हैं, वे कहते है – "यह तिलस्मी खोह है, जयंती जहाँ काला सफेद और सफेद काला बनकर निकलता है। जानती हो यह सामने बैठा लडका पिछले वर्ष सर्वोच्च स्थान पाये था, इसे निश्चित यू.जी.सी. स्कॉलरशिप मिलती, पर इस वर्ष यह तीसरी पोजिशन पर है। दो लडके इसके सिर पर बिठा दिये गये हैं, जो

इससे साहित्य पढते रहे है... ऐसा इसलिए है कि, न चाहते हुए भी यह मान गया है कि, वह लडका सुबोध की पार्टी में है। यानी सुबोध की कोई अस्तित्वहीन पार्टी है, जिसका यह नेता है और सुबोध भट्टाचार्य को सबक सिखाने के लिए इसकी हत्या कर दी गयी है।"8 इस बात से भट्टाचार्यजी इस बात से भट्टाचार्यजी अधिक दु:खित होते हैं। सुबोध भट्टाचार्यजी के द्वारा विश्वविद्यालयों में भ्रष्टाचारों से कुचल जानेवाले प्रतिभा का चित्रण किया है। झूठ को वे नहीं मानते। छात्र उनपर इल्जाम लगाते हैं उन्हें घिराव डालते हैं। मगर वे सच से दूर नहीं हटते।

4) हरिमंगल.

प्रामाणिक एवं देशप्रेमी पात्र है। एम्.ए.करने के बाद ए.जी. ऑफिस में इमानदारी से नौकरी करता है। उसपर झूठे इल्जाम लगाकर उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। पिता के पूछने पर हरिमंगल कहते हैं, "सबसे बडा नुक्स है कि, हम इमानदारी से काम करते है।"9 इस वाक्य से हरिमंगल के मन की व्यथा हम समझ सकते हैं। हरिमंगल एक क्षण हँसता हुआ मिलता है, तो दूसरे क्षण गंभीर एवे रुखा दिखाई देता है। इस पात्र में अपनी एक विशेषता है, वह सभी लोगों से अलग लगता है। वे समाज में स्थित भ्रष्टाचार को मिटाना चाहता है। अंत में उसके लिए वह अपनी जान दे देते है।

5) बक्कडगुरु

बक्कडगुरु समाज की जडमूल को लगा हुआ एक कीडा है जो अंदर से समाज को खोखला कर रहा है। अपने नीजी स्वार्थ के लिए वह तिवारी को अपने गैरकानूनी कामों के सहभागी करना चाहता है। उसकी बातों से उसका व्यक्तित्व स्पष्ट होता है। होटल फिलाडेल्फिया में उसके सभी गैरकानूनी धंदे चल रहे हैं वह लडकीयोंद्वारा वेश्या व्यवसाय चलाता है। युवकों को हथिया लेकर, पैसो का लालच दिखाकर उन्हे कुत्तों की तरह पालते है। समय आनेपर जो चाहे वह काम करवाता है। लडकियों को फूसलाकर उनके फोटो निकालकर उन्हें ब्लैक – मेल करता है। उन्हें काल गर्ल्स के रुप में प्रयोग में लाता है। वह इन्सानियत पर लगा एक धब्बा है, जिसे मिटाना मुश्किल है। समाज विघातक कृत्यों को बढावा देनेवाला आदमी है जिसे मिटाने के लिए हरिमंगल को अपनी जान पडती है। अंत में वह पराजित होता है। हरिमंगल की कुर्बानी सफल होती है। शोभना भी स्वयं बक्कड के धंदों से नाराज है। वह कहती है – "अच्छे लोगों पर बुरे पैंफलेट निकलना ताकि बुरा – भला सब कुछ गड्ड – मड्ड हो जाये, यह बदमाशों के लिए

परमप्रिय धंदा है। कहीं अच्छे डरपोक हुए तो ब्लेकमेलिंग भी चल सकती है।"[10] बक्कडगुरु समाज को लगी हुई घीण है जो समाज विघातक है। बक्कडगुरु जैसे लोगों की असलियत पर लेखक ने यहाँ खुलकर प्रकाश डाला है।

6) देवनाथ

देवनाथ टूटेंगे परंतु झुकेंगे नहीं इस प्रकार की प्रवृत्ति रखनेवाला विश्वविद्यालयीन छात्र है। वह रामानंद की भीरुता की आलोचना करते हुए कहता है कि, कोई भी दुरुस्त काम करने निकले तो तुम्हारी हिम्मत रफूचक्कर होती है। वह रामानंद को उस कबूतरखाने में मर जाने की कडी सूचना देता है। वह प्रतिशोध लेने की प्रवृत्ति से ओत–प्रोत भरा है। वह सफेदपोशों, बेईमानों, लुच्चे राजनीतिज्ञों सें झूठे मक्कार लोगों से बदला लेना चाहता है। डॉ. धुमालजी के मतानुसार "वह जीना हो तो यो जियो याद जो करे सभी वाली जिंदगी जीना चाहता है।" और रामानंद की आंदोलनकारियों के मिटींगो में शामिल होने की सूचना देता है। वह छात्र नेता है। उसका कहना है कि, हमारा आंदोलन अहिंसक है हम जनतंत्र का गला घोटनेवाली सरकार को चेतावनी देना चाहते है कि, वे हमसे ना टकराये। आज ऐसी छात्र शक्ति से टकराना कठिण बात है। सुबोध भट्टाचार्यजी को छात्रों के घिराव से वह मुक्त करता है।

अन्य पात्र –

उपन्यास में पात्रों का बाहुल्य होने के कारण पात्रों को पाठक याद नहीं रख सकते। इसमें मुख्यपात्र के साथ श्रीकांत, नंदकिशोर, रज्जो, आरती, रमेंद्र, जयंती, शोभना, जमुना, माथुर, लाजो, रजुल्ली आदि गौण पात्र भी आये हैं। लेकिन सभी पात्र रामानंद से संबंधित लगते हैं, इसलिए उन्हें छोड भी नहीं सकते। पात्रों के चित्रण में आँचलिकता की विशिष्ठता दिखाई देता है। कुछ पात्रों द्वारा जीवन की गंभीरता का चित्रण भी किया है। जमुनादास के जीवन इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है। शुरु से अंत तक जमुनादास दुःखों को सहता रहता है। इस उपन्यास में कुछ आश्चर्यजनक घटनाएँ भी घटी हुई हैं। आरती जैसी संस्कारपूर्ण लडकी का माथुर जैसे आदमी के साथ विवाह करना, शोभनाद्वारा रामानंद को भाई मान लेना आदि घटनाएँ इसका अच्छा उदाहरण हो सकती हैं। आलोच्य उपन्यास के पात्र केवल एक जीवित चित्र ही नहीं, अपनी विशेषताओं से अपना पूर्ण व्यक्तित्व प्रकट कर देते हैं। पात्रों के स्वभावों, विचारों और रिवाजों से पाठक परिचित हो जाता है। देबू, रमेंद्र जैसे छात्रों में बढती संघर्ष की प्रवृत्ति के परिचायक लगते हैं। वे अपने हक के लिए आंदोलन कर रहे हैं। पात्रों में

स्वाभाविकता है, इसलिए वह पात्र यथार्थवादी एवं जीवन के नजदीक लगते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में कुछ पात्र मानो विश्लेषण विधी से चित्रित किये हैं। श्रीकान्त का चित्रण इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है। एक पात्र दूसरे पर व्यंग करता है। रामानंद तिवारीद्वारा पुजारी के दोषों पर व्यंग इसका अच्छा सबूत है। मानव के जीवन में आनेवाले सभी पहलुओं को सुक्ष्मता से यहाँ चित्रित किया है। उपन्यास के सभी पात्र स्थिर हैं। वे अपने मूल स्वभाव धर्म को नहीं छोडते। किरण का चित्रण करते समय लेखक कवि बने हैं। उसके सौंदर्य को प्राकृतिक उपमा दी गयी है। पात्रों के मन की गहराई छूने की कोशिश लेखक ने की है जो सफल हुआी है।

<u>निष्कर्ष</u> :- "गली आगे मुडती है" के सभी पात्र भिन्न समाज के प्रतिनिधी पात्र लगते हैं। अतः इनके संस्कारों और विचारों में भिन्नता लक्षित होती है। इन सभी पात्रों के जीने की नीजी पद्धतीयां भी हैं लेकिन नितांत एकांत परिस्थितीयों में जीते हुए भी आधुनिक विचारधाराने उनके संस्कार, विचार और मन को बेहद प्रभावित किया है। ये सभी पात्र नये भावबोध के प्रभाव से ओत-प्रोत लगतेहैं। ये पात्र लेखक के विचारों का वाहक बने हुए हैं। ये सभी पात्र जीवन के वास्तविक प्रसंगों से लिये गये हैं। इसलिए प्रस्तुत उपन्यास में इनकी वास्तविकता और जीवंतता अधिक प्रभावी लगती है। रामानंद भीरु और भावुक पात्र है जो जोखिम उठाकर जीना नहीं चाहता है। उसे चिंतन और क्रियाकलाप में भारी अंतर दिखाई देता है। जयंती और किरण से वह आंतरिकता से जुडा हुआ है, लेकिन स्वीकार के धरातल पर अस्थिर नजर आता है। हरिमंगल अपने साहस को नियंत्रित नहीं कर सकता, रज्जो अपने अपमान को पी लेती है, शोभना सुविद्या गृह में बंदीनी बनी रह जाती है। वह मुक्तिका श्वास लेना चाहती है परंतु अभिष्ट की प्राप्ती के लिए कुछ भी करने में बिल-कुल असामर्थ लगती है। बक्कड अपने स्वार्थ से जुडा है। इन चरित्रों में जो अधूरापन लक्षित होता है यह समकालीन जीवन की यथार्थता एवं वास्तविकता है। लेखक ने इन पात्रों के अधूरेपन को वास्तविक धरातलपर प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के सभी पात्र अपनी लघुता निरीहता और परिधि में महान बन गये हैं।

इस उपन्यासमेंऐसे भी पात्र हैं जो समाजवादी चरित्र के रुप में चित्रित हुए हैं। बक्कड गुरु पलायनवादी पात्र है, वह अपने कर्तव्यों से दूर भागता है। संवेदनशील पात्र सुबोधजी है वह अपने तरीके से चलना चाहते है।

इस उपन्यास के पात्र स्थिर लगते हैं, उनमें अंत तक परिवर्तन या बदलाव की स्थितीयाँ. लक्षित नही होती है। इस उपन्यास में पात्रों के चरित्रचित्रण के साथ-साथ कथावस्तु विकसित हो जाती है। पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत सफल लगता है।

3] **कथोपकथन/संवाद** -

" उपन्यास के शिल्पविधान में संवाद या कथोपथन मुख्य भूमिका निभाते हैं। लेखक अपनी ओर से केवल पात्रों का वर्णन करता जाय तो पाठक निश्चित रुप से ऊब का अनुभव करते हैं परंतु लेखक जब संवादों के माध्यम से पात्रों को प्रस्तुत करता है तब वे आकर्षक सशक्त एवं स्वाभाविक गति प्राप्त करते हैं। यद्यपि संवादों का उपयोग कोई अनिवार्य तत्व नहीं है किंतु इसके द्वारा हम उपन्यास को अधिक स्वाभाविक एवं यथार्थ बना सकते हैं। उपन्यास की स्वाभाविकता का आधार उसके संवाद होते है।"[11] उपन्यास शिल्प विधान के अंतर्गत संवाद कथानक का विकास करते हैं। चरित्र चित्रण में सहायता पहुंचाते हैं, पात्रों को स्वाभाविक बनाते हैं।

उपन्यासों में पात्र विशेष उद्देश्यों का और सामाजिक घटनाओं का मनोनीत उद्घाटन कथोपकथन के माध्यम से ही किया जाता है। उपन्यास का यह महत्वपूर्ण तत्व है। जो कथाविस्तार और पात्रों के चित्रण में साहयक होता है। उपन्यास का उद्देश्य स्पष्ट करना संवादों का उद्देश्य होता है। कथानक का विकास भी संवादों के माध्यम से होता है। "गली आगे मुडती है" के संवाद इसी कसौटी पर पूरे उतरते हैं। सुबोध भट्टाचार्यजी शुक्ला से कहते हैं -"मै पिछले पाँच वर्षों से पढा रहा हूँ, नया लेक्चरर हूँ। पर इन पाँच वर्षों में जो सचमुच बहुत थोडे वर्ष कहे जायेंगे मैने जो कुछ पढाया है, वह सब जानते है। लडकों के साथ मेरा व्यवहार केबिन तक सीमित नहीं रहा है। मैं अध्यापन को राजनीति से नहीं जोडता यही मेरी गलती है। मैं उन अध्यापकों में नहीं हूँ जो व्यक्तिगत स्वार्थवश ईर्ष्या - दग्ध होकर या अहं के कारण प्रमाद में लडकों का अहित करते हैं। मैं जो कुछ हुं, सबके सामने हूँ। तुम्हारे भी इनके भी तुमसे किसने कहा कि, मैने कापियाँ जाँची है?"[12] इससे स्पष्ट होता है कि, विश्व - विद्यालयों मे जों छात्र पढ रहे है, वे सुबोध भट्टाचार्यजी जैसे प्राध्यापकों को धमकाकर ज्यादा से ज्यादा गुण हासिल करना चाहते हैं, लेकिन वे ऐसे धमाकियों से घबराते नही हैं, वे असलियत का सामना करना चाहते हैं। इसी चित्रण से विश्वविद्यालयों में स्थित भ्रष्ट नीति के दर्शन होते हैं। छात्रों की गलत नीति

की अध्यापक सहायता करते हैं। दूसरे अध्यापकों को नीचा दिखाने के लिए ये अध्यापक ऐसे छात्रों की साहयता करते हैं।

कथोपकथन में पात्रों की विचारधारा का प्रतिबिम्ब झलकता है। इसी माध्यम द्वारा लेखक चरित्रों की न केवल व्याख्या करते हैं, अपितु उनके विषय में विविध जटिल परिस्थितियों तथा अंतर्द्वंद्व संबंधी प्रत्यक्ष बोध कराता है। रामानंद तिवारी जब हरिमंगल को देखने के लिए अस्पताल जाता है तब उसे किसने मारा यह नहीं समझ रहा था, किसी अनजान व्यक्ति ने छात्रों की पोशाक में हरिमंगल को मारने का प्रयास किया। छात्रांदोलन का फायदा उठाने का प्रयास किया था। इस पर प्रतिक्रिया कहते है कि, – "यह कौन जानता है?" लेकिन ज्यादा देर नहीं लगेगी। मैं यदि बच गया तों मै दिखा दूँगा तुम्हें कि, पोशाक की पोल के भीतर से असली चेहरा कैसे निकल जाता है। मै दद्दू की शपथ लेकर कहता हूँ कि, मैं इस मुकम्मल गैंग को ध्वस्त करके ही दम लूँगा चाहे स्वयं भी ध्वस्त क्यों न हो जाऊँ।"[13] इससे हरिमंगल के मन में उत्पन्न घृणा एवं बदले की भावना स्पष्ट नजर आ रही है। हरिमंगल बुराई को मिटाने के लिए अपने आप को न्यौछावर करने के लिए आमदा हो गया है।

सुबोध भट्टाचार्य विश्वविद्यालयों में छात्रोंद्वारा किये जानेवाले गैरव्यवहार पर क्रोधित है मगर वे कहते है कि इन छात्रों को हमारे बीच में से किसी अध्यापकों ने फुसलाया है, ताँकि वे अध्यापकों पर किचड उछाले। इन सभी धमकियों के सामने वे नहीं झुकते। वे सबको अपनाकर उसका समर्थन करते है। शुक्ला सुबोधजी से कहता है –" मै कुछ नहीं जानता। मैं इतना जानता हूँ कि, कापियाँ आपने देखी है और आपने अन्याय किया है, जिसका नतिजा बुरा होगा।"[14] इस बातपर सुबोधजी कहते हैं –" तुम नतीजे की धमकी की आड से सत्य बोलने से कतराते क्यों हो? तुम्हारी आत्मा में यदि एक क्षण के लिए भी सत्य के प्रति निष्ठा हो तो पता चल जायेगा कि, न्याय हुआ है या अन्याय।"[15] इससे सुबोध का व्यक्तित्व नजर आता है। यह पात्र अच्छे अध्यापकों का प्रतिनिधित्व करता है। इसीतरह कथोपकथन द्वारा पात्रों के स्वभावों का, विचारों का भाव–भावनाओं का चित्रण हुआ है।

कोई भी उपन्यास संवादों के बिना नहीं लिखा जाता। पात्रों के संवादोद्वारा उद्देश्य की पूर्ति की

जाती है। कभी–कभी लेखक स्वयं भी अपनेद्वारा उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं "गली आगे मुडती है" में छात्रांदोलन और अन्य सामाजिक समस्याओंपर प्रकाश डाला है। राजकाज की भाषा अंग्रेजी होने पर सभी लोगों को बहुत मुसिबतें उठानी पडती है। अंग्रेजी को हठाकर हिंदी भाषा लाना अत्यावश्यक है। उसके लिए छात्र आंदोलन के लिए तैयार होते हैं लेखक देबू द्वारा भविष्य की ओर भी संकेत करते हैं अगर समयपर ही हमने अपने कदम आंदोलन की ओर नही बढाये और हिंदी के पक्ष में समर्थन नहीं किया तो भविष्य में हिंदी को हमेशा के लिए कुचल दिया जायेगा।

हरिजन लागोंपर सवर्णोद्वारा बहुत अत्याचार हो रहे हैं उसके दुःखों का चित्रण करते हुए लेखक रज्जो के बलात्कारित माध्यम से अपने मंतव्य को स्पष्ट करते हैं बलात्कारित दलित रज्जो कहती है – "गरिबों को कोई इज्जत का मोल नही? हरिजनों के लडकी का शील अन्य जाति के लडकियों के शील के बराबर है फिर भी सवर्ण लोग हरिजनों को जाति के तराजू में क्यों तौलते हैं हरिजनों के लडकी के दुःख सुवर्ण लडकियों की तरह है। फिर भी उनके और हमारे बीच ये भेद क्यू हैं? इस संवादों द्वारा हरिजनों के अत्याचार पर प्रकाश डाला जाता है और उपन्यास के उद्देश्यों तक पाठकों को पहुँचाया है। इसमें कुछ लंबे संवाद भी आये हैं, फिर भी ये प्रवाहमयी लगते हैं हिंदी आंदोलन के बारे में देबू का संवाद बहुत लंबा है। कथोपकथन द्वारा वातावरण की निर्मिती भी हुआ है। बाढ के चित्रण एवं संवादों से बाढ का माहोल पाठक के सामने आता है। सीचन्न कहता है –"आप सभी जगा रहे, बडा तेज पानी बढा आय रहा है भइया जी, कोठी चारों ओर से जलमग्न हुई गयी है। दरवज्जे से भीतर भी पानी घुसे रहा है।"[16] बिट्टो कहती है –"बाढ से कोठि घिर गयी है।"[17] गरभानृत्य समय वहाँ के मंडप का चित्रण संवादोंद्वारा होता है। संवादों से पात्रों को समरस करके वातावरण का निर्माण होता है। पात्र और वातावरण की पारस्पारिक अनुकुलता और दोनों के अनुरुप संवाद और शैली इनसे प्रस्तुत उपन्यास सफल बना है। संवादों से आँचलिकता का बोध होता है। प्रस्तुत उपन्यास के संवादों से कथानक आगे बढ गया है, पात्र परिचय, पात्रों के विचार, व्यक्तित्व, वातावरण आदि का बोध कथोपकथन से होता है। कथोपकथन सफल उपन्यासों के लिए महत्वपूर्ण तत्व है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत उपन्यास "गली आगे मुडती है" के संवादों को नजरांदाज करने पर यह पता चलता है कि, यहाँ लंबे – चौडे संवाद कभी जगहों पर होने पर भी निरस नहीं बने हैं बल्कि जिंदा और पात्रों के चरित्रिक पहलुओं के खोलकर रखने में कामयाब हो चुके हैं यहाँ भट्टाचार्य, रामानंद तिवारी, रज्जो, देबू आदि के संवाद पात्रों की स्थिति और गति पर प्रकाश डालते हैं वे अपने विचारों को इसी संवादों के माध्यम सें पाठकों के सामने प्रस्तुत करके खुद के व्यक्तित्व के कभी पहलुओं को भी उजागर करते हैं इन संवादों से वातावरण निर्मिती होकर हुबहुबचित्र प्रस्तुत हो जाता है। संवादों से ये पात्र टूटे हुए, साहसी होकर भी आत्मभीरु लगते हैं रामानंद तिवारी इसका उदाहरण है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्रों के चरित्र चित्रण का उद्घाटन, पात्रों के वास्तविक जीवन का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते है। ये संवाद उद्देश्य – पूर्ति के लिए सक्षम लगते हैं संवादो से पात्र अपने मन के भावों को वहन करने में अपने विचारों का विश्लेषण करने में सफल बने हैं।

संवाद जिंदा और सक्षम लगते हैं। "गली आगे मुडती है" उपन्यास के संवादों द्वारा उपन्यास की कथावस्तु का विकास हुआ है। संवादों के माध्यम से पात्रों के चरित्र चित्रण को गतिमिल पाई है। संवादों ने पात्रों को स्वाभाविक बनाने में बहुत सहायता पहुंचायी है। इस उपन्यास के संवाद नवीन और कलात्मकता को प्रस्तुत करते हैं। इन संवादोंका संबंध वर्तमान जगत से जुडाया बया है। संवादों में बिंबात्मकता है, इससे पात्रों की मानसिकता उनके शील, उनकी प्रकृति का पता चलता है। रामानंद के संवादो में लेखक का प्रतिरुप हमें दिखाई देता है।

4) **वातावरण** –

उपन्यास के शिल्प विधान के अंतर्गत देश–काल और वातावरण तथा परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान लेता है। यह तत्व प्रत्येक प्रकार के उपन्यासमें किसी न किसी सीमा तक अवश्य उपलब्ध हो जाता है। इस तत्व के अंतर्गत किसी भी समाज या राष्ट्रकी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक परिस्थीतियाँ, आचार – विचार, रहन – सहन, रीति – रिवाज तथा व्यक्ति का अंतरिक संसार कुंठा, काम, भय, अहंम अचेतन व्यापार, स्वप्न आदि के जटिल परिवेशको समाहित किया जा सकता है।

लेखक को पात्रोंके व्यक्तित्व की पूर्णता को उजागर करने के लिए उनकी परिस्थितियों स्थान और काल का भी पूरा विवरण देना पडता है। वातावरण का पूरा-पूरा चित्र दिया जाता है। जिससे पाठकोंके मनमें विश्वास उत्पन्न कराया जाता है।"[18]

अपने प्राथमिक परिचय से अंत तक पाठक के मन को अभिभूत करते हुए अकथित रुप में अपने साथ समेटे रहना उपन्यास में वातावरण का ही गुण होता है। वातावरणसे अभिप्राय देश और काल की उन उपाधियों से है, जिनके अंतरात्म से उपन्यासकार कथा एवं पात्रोंका निर्विशिष्ट रुप चित्रित करता है। इसके अंतर्गत युग और देश की वेशभूषा रीतिरीवाज आदि के साथ घटनाओं और व्यक्तिओं की स्थूल परिस्थितीयाँ भी शामिल है, इन्हीं के संयोजन से वातावरण में यथातथ्यता आती है। संक्षेप में कहा जाता है कि, जीवन और सामाजिक वातावरण कथावस्तु को सजीवता प्रदान करता है, और भौतिक वातावरण पात्रों के मानसिक परिवर्तन के लिए संयोग है। वातावरण से लेखक संपूर्ण परिवेश को विश्वासनीय बना सकता है। और उस काल को सजीव बनाता है। उपन्यास उस काल का दर्पण होता है, जिस काल में ये उपन्यास निर्मित है। वातावरण में मुख्य प्रभाव की अभीष्ट अभिव्यक्ति करना, मानसिक दृष्टिकोन के चमन के साथ मुख्य प्रभाव को प्रभावोत्पादक बनाना भाषण प्रभाव तथा संसर्ग के कम में विशिष्ट विवरणों के आकलन कराना आदि बातें वातावरण के अंतर्गत समाविष्ट की जाती है।

इन सभी हेतुओं को सामने रखकर "गली आगे मुडती है" में वातावरण निर्मिती की गयी है। वहाँ के माहोल का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। काशी का नाम छात्रांदोलन के साथ जुडा गया है। यहाँ सभी प्रकार के वातावरण का चित्रण आया है, काशी क्षेत्र तीर्थक्षेत्र के रुप में प्रसिद्ध है, वहाँ के मंदिर, "गंगा मैया" का चित्रण एवं छात्रांदोलन आदि को लेखक ने कुशलता से चित्रित किया है। वहाँ की संस्कृति, रहन – सहन को वातावरण के रुप में यथार्थ ढंग से चित्रित किया है। बनारस शहर के वर्णन से वहाँ के वातावरण को समझने में साहयता मिलती है। "गंगा को धनुषाकार होना था तो यहीं क्यों हुई और ही तो उसले अपने सारे मरोड को एक शहर में क्यों बदल किया? इसे देखकर लगता है जैसे कोई तपस्वी कुमारी अपनी बलखाती कमर पर संस्कृति का कलश धरे चली जा रही है। हाय, यह छत्राकार ज्योति कितनी शाश्वत और अमर है।"[19] शहर की संस्कृति के दर्शन से स्पष्ट होती है।

अजगर की तरह चलता, रोड, चारों ओर हरियाली आदि के रुपमें काशी शहर का वास्तविक चित्र पाठक के सामने खडा रहता ही छात्रआंदोलन के चित्रण में कथानक को वातावरण से पृष्ठी मिली है। आंदोलन के समय हिंदी को बचाने की घोषणा, अंग्रेजी नामपटों को मिटाना, अंग्रेजी साइनबोर्ड को तोडना, साइन बोर्ड बदलने के लिए इन्कार करनेवो लोगोंका मुँह काला करना, छात्रोंद्वारा आंदोलनों के नामपर फल की टोकरियों पर हाथ साफ करना आदि से छात्र आंदोलन का चित्र हमारे सामने खडा होता है। गंगा की बाढ के चित्रण में सभी लोगों की वास्तविक स्थिति का अंकन करने में वातावरण सफल बना है। बादग्रस्तो में फैला बिमारी का भय, बादग्रस्त इलाके की दुर्गंधी ओर गंदगी से ग्रस्त लोग यहाँ नजर आते हैं। वातावरण से आँचलिकता का बोध होता है। स्थानीय रंग के संदर्भ में मत देते हुए सीताराम चतुर्वेदी ने लिखा है कि – "आँचलिकता किसी कथा के मूल तत्व के रुप से नहीं, वरन् सजावट के रुप में उस कथा के लिए दृश्य भाषा, वेश, आचार–विचार और व्यवहार का सटीक विस्तृत विवरण है।"[20] वातावरण से परिस्थिति आदि का भी बोध होता है। वातावरण और पात्र के पारस्पारिक संबंध के बारे में राल्फ फाक्स कहते हैं – " वातावरण का प्रश्न पात्र और वातावरण के बीच का वह नाजुक सम्बन्ध है, जिसे मूर्त करना इतना कठिण है। और जो यदि लेखक कसे अपने पात्रों की वास्तविकता को गहरा बनाना है। अपनी कृति के निर्णयात्मक क्षणों को धनीभूत बनाता है, लेखक के लिए आवश्यक है।[21] वातावरण और पात्र एक दूसरें में मिले जुले होने चाहिए। वातावरण को वह ज्ञात रुप मिलना चाहिए कि, हमें ज्ञात हो कि, यह हमारे जीवन से दूर नहीं है। हमारा जीवन उसमें स्पष्ट नजर आना चाहिए। इसके बारे में जान कपूर पाविस कहता है – " वातावरण इतना यथार्थ हो कि, हम उसमें चल फिर सके।"[22]

"गली आगे मुडती है" का वातावरण इसी कसौटी पर पूरा उतरता है। इसमें गरभा नृत्य के समय किरण के घर का चित्रण, किरण और रामानंद सैर के लिए जहाँ जाते हैं, वहाँ के बगिचा का चित्रण, सारसनाथ का मंदिर और प्रकृति का वर्णन हुबहुब वातावरण का निर्माण करते हैं। सारसनाथ मंदिर का वातावरण देखिए – " सामने टीले के नीचे कच्चे घाटवाला पोखर जिसके कगारों पर बेल्या के झाड फूले थे। नीले – नीले फूलों के बीच पोखर का पानी सुंदर था। ऊपर ढीले पर मंदिर के पास कनेर खिले

थे।''[23] मंदिर के वातावरण का जिंदा चित्रण यहाँ मिलता है। आंदोलन का संघर्षमयी और तनावग्रस्त वातावरण, विश्वविद्यालयों में चली भ्रष्ट नीतियाँ छात्रोंद्वारा सुबोध भट्टाचार्य को घिराव डालने का प्रयत्न आदि घटनाएँ आंदोलनों के दिनों की याद दिलाकर वातावरण को यथार्थ रुप में प्रस्तुत करती है।

बक्कड गुरु के होटल का वातावरण काशी शहर से अलग-अलग लगता है। काशी का चित्रण ऐतिहासिक लगता है। मगर बक्कडगुरु के होटल का चित्रण आधुनिकता से भरा है। हरिमंगलद्वारा सुनायी गयी घटना अलग लगती है। सही रुप में यह उपन्यास अपने वातावरण चित्रण में सफल हुआ है।

निष्कर्ष -

संक्षेप में प्रस्तुत उपन्यास का वातावरण कथानक के लिए अनुकूल है। और यहाँ के पात्र वातावरण के रुप में यथार्थ लगते हैं। इससे उपन्यास हमारे जीवन की ही शक्ल लगता है। इस उपन्यास में धार्मिक, सामाजिक, भौगोलिक, सभी रुपों से वातावरण निर्मिती हुआ है। गरभानृत्य के वातावरण से वहाँ के त्यौहार का चित्रण हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि जीवन का कोई भी पहलू यहाँ छूटा नहीं है। काशिवासियों की रहन - सहन रीतिरिवाज, संस्कृति, सामाजिक, राजनितिक स्थितियों का चित्रण वातावरण के रुप में उभर आया है। प्रस्तुत उपन्यास की सफलता में यहाँ वातावरण साहयक है। वातावरण चित्रण के क्षेत्र में शिवप्रसादजी का प्रयोग युग द्रष्टा और युग सृष्टा का तो है ही कलात्मक सजगता का एक महत्तम आदर्श भी है। आलोच्य उपन्यास के परिवेश की सीमाओं ने पात्रों को विकसित, परिवर्तित और बनाया - बिगाडा है। विश्वविद्यालयीन माहौल का वहाँ की अव्यवस्था, अराजकता और अशैक्षिक माहौल का पूरा चित्र उभरा है। इससे उपन्यास जीवंत बना है। पूरा चित्रण प्रस्तुत किया है। इससे पात्र विकसित बने है, और घटनाएँ बनी बिगडी है। इस उपन्यास में वातावरण के माध्यम से सत्य का भ्रम पैदा किया है। घटना और पात्र यथार्थ जीवन से चुने है, इससे वातावरण हुबहुब बन बैठा है।

5) **भाषाशैली** –

पात्रों की यथार्थता के लिए उनकी भाषा की स्वाभाविकता अनिवार्य है। स्वाभाविकता को चरम दशा तभी प्राप्त होगी होगी, जब कि पात्रों को बोली को उसी रुप में उपन्यास में रखा जाए। यही सोचकर आज कल बहुत उपन्यासों में प्रादेशिक बोली का प्रयोग किया जा रहा है। शब्द भांडारों में से आवश्यक शब्द चुनकर और उपर्युक्त शैली अपनाकर अपेक्षित प्रभाव लाया जा सकता है। भाषा साहित्य बाह्य रुप है और वही उसकी आत्मा को अपने अंदर सुरक्षित रखती है। वह मानव हृदय के भावों को मूर्त रुप देकर स्थायित्व प्रदान करती है। शैली भाषा से अलग वस्तु नहीं है, वह भाषा की चाल और गति ही है। शैली भाषा को भावानुकुल रुप प्रदान कर उसकी अभिव्यंजक शक्ति को महत्ता प्रदान करती है। कहा जाता है कि, " भाषा एक स्वाभाविक वस्तु है लेकिन शैली कलाकार का रचना – चातुर्य। लेखक अपने भावों के अधिक मूर्तिमत्ता प्रदान करने के लिए भावानुकुल शब्दों का प्रयोग करता है।"[24] शिवप्रसादसिंह के समस्त कथालेखन के आधार पर अब हम सत्ताधिकार यह कह सकने की स्थिति में है कि उनकी भाषा के स्पष्टतः दो स्वरुप देखे जा सकते हैं। एक वह है जो "अलग अलग वैतरणी" और उसका विकास है दूसरा "गली आगे मुडती है"। "पहली को संस्कृतनिष्ठ अभिजात भाषा कह सकते है जिसका अब तक का चरन विकास "नीला चाँद" में दृष्टव्य है तथा दूसरा लोकभाषा युक्त स्वरुप है, जो लेखक के अधिकांश लेखन का प्रतिनिधित्व करता है।"[25]

"गली आगे मुडती है" में आँचलिक भाषा का प्रयोग किया है। इससे पात्रों में स्वाभाविकता आयी है। आँचलिक भाषा से स्थानीय वातावरण में सजीवता आयी है। – "अच्छा – अच्छा। मै जा रहा हूँ बइठके, पर टेम का खिलरय रखना नहीं तों बक्स – बिस्तर सडकपर होगा, हाँ........।"[26] संस्कृत भाषा का प्रभाव इसमें है। काशीनगर की संस्कृति का पता इससे चल सकता है। काशी संस्कृत पंडितों की भूमि है। संस्कृत के साथ गुजराथी भाषा, मिठाई के नाम आदि शब्द आये हैं। किरण और उनके माता पिताजी के माध्यम से गुजराथी भाषा प्रयुक्त हुआी है। "एनो बाप नात बाहर छे। ऐनी बेन अंतर्जातीय विवाह किछो छे। हूँ संबंध नत्थी करी शकतो। हूँ प्राण आपी दर्शन पण –हारी बात नही मानूँ।"[27] प्रस्तुत उपन्यास में अनेक भाषा के शब्दों का प्रयोग होने के कारण भाषा शैली में विविधता आयी है।

लाजो हरिमंगल से कहती है – "तू बार–बार अगरवाल के नाम लेके हमका जलील काहे करत है? हम कह दिया कि अगर वाल से हमार कौनो वास्ता नहिनी।"[28] भाषाशैली पर प्रादेशिक बोली का प्रभाव पडा है। हिंदी, अँग्रेजी भाषा का प्रयोग इसमें आया है। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग यहाँ किया गया है। अशीक्षित रज्जो की गवार भाषा शिक्षित एवं शहर में रहनेवालो की परिष्कृत नागरी भाषा, ग्रामीण लागों की भाषा आदि कअी प्रकार के प्रयोग लेखक ने यहाँ किये है। शैलीपर उपन्यास की सफलता निर्भर रहती है। प्रस्तुत उपन्यास की शैली रोचक, सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। कहीं – कहीं क्लिष्ठता जरुर आयी है फिर भी पढते समय पाठक को अपने रस में उपन्यास बहा लेता है। पाठक के मनमें उत्सुकता एवं कौतुहलता बढती जाती है। तिवारी का वर्णन लेखक ने आत्मकथनात्मक शैली में किया है। उसके द्वारा अन्य पात्रों का भी परिचय मिलता है। बीच – बीच में काशी शहर के वर्णन में वर्णनात्मक शैली आयी है। शैली द्वारा उपन्यास में स्वाभाविकता एवं प्रभावोत्पादकता आयी है। उपन्यास सफल बना है। संक्षेप में आलोच्य उपन्यास की भाषा यथार्थवादी आँचलिक है। इसमें शब्द और विचारों की अनुकुलता है। रोमंटिक प्रसंगों का समावेश होने पर यह शैली परिवर्तित होकर रोमंटिक हो गयी है और मनोभावे को चित्रित कर सकी है। भाषा की अनुकुलता कथा को पाठक तक पहुँचती है। उपन्यास की भाषा पात्रानुकुल है, स्थानीय ढंग इसमें आया है। भाषा साहित्यिक प्रवाहपूर्ण है। पात्रों के कथोपकथन की भाषा और कथ्य उनके मानसिक विकास, शैक्षणिक योग्यता और वातावरण के अनुकूल है। मनोरंजकता पूर्ण एवं स्वाभाविकता से पूर्ण भाषा है। सुबोधजी के संवाद साहित्यिक और वैचारीक लगते है तो देबू, रमेंद्र, श्रीकांत इनकी भाषा आंदोलन की तीव्रता को प्रस्तुत करती है।

प्रस्तुत उपन्यास में भाषा एवं प्रस्तुतीकरण की नूतनता और विविध आयमिता विकास की सूचकता के साथ लेखककी मौलिकता तथा सजगता का परिचय देती है। सुबोध भट्टाचार्य की भाषा में – "काश, राजन। तुम और तुम्हारे अनुयायी इस नरक में ही रह गये होते। काश। तुम सबके साथ पृथ्वी छोडकर स्वर्ग जाने की इच्छा से अपने को मुक्त कर लेते।------तो शायद यह भूमि केवल एकमात्र झूठे और खुशमादेयों का स्थान न रखती।"[29] उपन्यास में आंदोलनकारीओं की भाषा में तीव्रता संघर्ष मयीता के दर्शन यहाँ होते है। इस उपन्यास की भाषा कही – कही आलंकारिक भी बनी है। किरण और तिवारी के बीच में चले संवाद और गरभानृत्य का वर्णन इन प्रसंगोंपर आलंकारिकता आयी

है। मंडप को सजाने के बाद मंडप के रंगों के संयोजन को किरण "सोना नों मरकत" कहती है उसे "राधाकृष्ण का भाव रंग" कहती है। पात्रों की भाषा से उनकी शिक्षा, विचार अभिव्यक्त होते है। बक्कड गुरु जैसे लोगों की भाषा अलग सी है। वे कहते है – " आज के जमाने में जीते रहना भी कला है, मिस्टर तिवारी। तुम समझते हो कि, तुम अपने रास्ते पर जा रहे हो, तुमसे क्या मतलब पर वह तुम्हारी गलती है। तुम किसी से नहीं टकराओगे तो भी कोई आकर तुमसे टकरा सकता है। तुम्हारी जिंदगी खतरे में डाल सकता है। इसी से मैंने कहा कि आज रहने के लिए भी ट्रेनिंग चाहिये।"[30] भाषाद्वारा हर एक वर्ग की समस्याओं पर प्रकाश डाला है । इन वर्गों के पात्रों के माध्यम से उनकी भाषा और बोली का ज्ञान होता है और उपन्यास में यथार्थता आ गयी है। रज्जुली, जमुनादास मलाह की भाषा का उदाहरण – "अरे नहीं गुरु भौजी भी। ऐसी औरत हमने तो अपनी जिंदगानी में देखा ऊ देवी थी भइया। हम आदमी खराब है। वैसी सुंदर तिरिया देखा तो राक्षस जगा। मैंने एक दिन जब जमना नहीं था, मढिया में जाकर उसका गट्टा पकड लिया।"[31] इससे मलाह लोगों की संस्कृति रहन–सहन का पता चलता है और आँचलिक भाषा से उपन्यास में यथार्थता आयी है। क्रान्तिकारियों की भाषा, देशप्रेम, त्याग और आत्मबलिदान के भावों से संयत दृढ और भावनायुक्त लगती है। हरिमंगल की भाषा इसीप्रकार की भाषा है। बीच – बीच में गीत भी आये हैं। गरभा के समय गाये जानेवाले गीत से उस समारोह में उभार लाया गया है मेहंदी रंग लाग्यो रे,

मेहंदी मे बाबी माणवे एनो रंग गयो गुजरात रे
नान्हों दियरिया लाडको, काई लाव्यों मेहंदी ना छोबरे
बाकी घूँटी ने भरया वाडका भाभी रंगो तुम्हारा हाथ रे
हाथ रंगीने बीरा शुं रे करूं एनो जौनारो तो परदेश रे"[32]

संस्कृत, गुजराती शब्द के प्रयोग समयानुकूल होने से वे कठिण नहीं लगतें भाषा में विविधता के दर्शन होते है।

भाषा के साथ शैली को भी अपनाया है। शैली से उपन्यास अधिक आकर्षक बनता है।

<u>निष्कर्ष</u> –

भाषा शैली की दृष्टि से "गली आगे मुडती है" यह उपन्यास सफल बना है। इस उपन्यास में विविध भाषिक प्रयोगों का प्रस्तुतीकरण उपन्यासकारने सफलता के साथ किया है। इसमें कअी प्रकार की भाषाएँ एवं भाषाओं का मिश्रित रुप देखने को मिलता है। गुजराती लडकी किरण अपने परिवार में गुजराती का प्रयोग करती है। लेकिन रामानंद के साथ वह खडीबोली का प्रयोग करती है। रज्जो अपने परिवार में "काशिका" का प्रयोग करती है परंतु रामानंद के साथ खडीबोली का प्रयोग करती है। नाविक काशिका का प्रयोग करते हैं तो बुद्धिजीवी वर्ग समवानुकूल खडीबोली और काशिका का प्रयोग करता है। अतः परिवेश और पात्रों की विशिष्टता के संप्रेषण में इस उपन्यास का भाषाप्रयोग प्रशसनीय लगता है। इस उपन्यास की भाषा पात्रों के परिवेश और संस्कारों का पता लगाने में सक्षम लगती है। बक्कडगुरु की भाषा और प्रोफेसर सुबोध भट्टाचार्यजी की भाषा इसके अच्छे उदाहरण है। विविध भावबोधों और संस्कारो सें प्रभावित इस उपन्यास के पात्रों की भाषा बडी अर्थ – व्यंजक बन गयी है। इस उपन्यास की भाषा में आँचलिक भाषा का भी सफलता के साथ प्रयोग हुआ है। नाविकों की भाषा इसका अच्छा उदाहरण है। भाषा का बहुआयमी रुप इस रचना में देखने को मिलता है।

शैली की दृष्टि से उपन्यास को सफलता मिली है। वर्णनात्मक शैली के साथ आत्मकथनात्मक शैली यहाँ आयी है। रामानंद का चित्रण आत्मकथनात्मक शैली में हुआ है तो शहर एवं अन्य अनेक प्रसंगों का चित्रण वर्णनात्मक शैली से हुआ है। उपन्यास में रोचकता, सरलता एवं प्रवाहपूर्णता शैली आयी है। इससे उपन्यास स्वाभाविक एवं सर्वग्राह्य बना है। भाषा शैली की दृष्टि से साठोत्तर कालखंड का यह उपन्यास एक नया प्रयोग लगता है। इसमें एवं प्रतिकोंकी विविधता के कारण सूक्ष्मता आयी है। बीच–बीच में काव्यात्मकता के कारण भाषा धारावाही एवं प्रवाहमयी बनी है। भाषामें चिंतनशीलता है। प्रोफसर भट्टाचार्य की भाषा इसका अच्छा उदाहरण है। लेखकने मानवी जीवन की अभिव्यक्ति की विविध शक्लों से परिचित कराने के लिए विविध भाषाओं के प्रयोग किये हैं। पात्रानुकूल भाषा यहाँ देखने को मिलती है। लोकभाषाके प्रयोग को "गली आगे मुडती है" जैसे उपन्यास की संभ्रांत भाषा में संप्रेषण के लिहाज से ही समाहित किया है।

6| उद्देश्य –

उपन्यास लिखने के पिछे कुछ न कुछ उद्देश्य होते हैं, उपन्यास मानवीजीवन का चित्र मात्र है, जिसमें किसी समस्या को सुलझाले का प्रयास किया जाता है। किसी परंपराओं एवं प्रथाओं पर प्रकाश डाला जाता है। उपन्यास में तत्कालिन समय की प्रथाएँ, समस्याएँ, आंदोलनों या किसी सामाजिक प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है। सामाजिक जनजागृति मनोरंजन और उसी के साथ उपदेश आदि उद्देश्य से उपन्यास लिखे जाते हैं। उपन्यास का उद्देश्य ऐतिहासिक प्रथाओं पर प्रकाश डालना होता है। 'वैशाली की नगरवधु,' 'चन्द्रकान्ता,' 'चन्द्रकान्ता सन्तती' आदि उपन्यास ऐतिहासिक गतिविधियों को पाठकों के सामने खडा करते हैं। उपन्यास द्वारा नैतिक शिक्षा, समस्याओं का सुधार, सामाजिक नीति का संरक्षण आदि उद्देश्य रहते हैं। ज्यादातर उपन्यास समस्या प्रधान होते हैं, प्रेमचंदजी ऐसे उपन्यास में अग्रस्थान स्थान रखते हैं। ब्रजरत्नादासजी का उद्देश्य के बारे कथन देखिए "मानव अपनी सचेतन अवस्था में निरुउद्देश्य रह नहीं सकता। साधारणतः उपन्यास मनोरंजन का साहित्य समझा जाता है। पर यह केवल इसका बाह्यरुप है, अच्छे उपन्यास जीवन संघर्ष के चित्रोंद्वारा सिद्धांतों का नैतिक महत्व समझाते हैं, तथा मनोवेगों या प्रवृत्तियों द्वारा प्रेरित होने पर कार्य या अकार्य कर मनुष्य कैसे सफल अथवा विफल होते हैं इनके सजीव चित्र उपस्थित कर उनपर प्रभाव डालते है।"[33] गुलाबरायजी का कथन "विचार और भाव भी होते हैं, लेखक का जीवन के प्रति विशेष दृष्टिकोन होता है, उसी दृष्टिकोन से वह जीवन की व्याख्या करता है, और उसी के अनुरुप उसके विचार होते है।"[34] उपन्यास किसी उद्देश्य के सिवा निर्माण नहीं होते। शिवप्रसाद सिंहजी हमारे सामने आते है, समाज में निर्मित समस्याओं का विचार लेकर, इसमें छात्र समस्या को वे अग्रस्थान देते हैं।

"गली आगे मुडती है" का प्रमुख उद्देश्य छात्र आंदोलन की गलत नीतिपर प्रकाश डालना है। आज की भ्रष्ट शिक्षा नीतिद्वारा रामानंद जैसे प्रतिभावान छात्रों को कैसे कुचला जा रहा है। इस पर भी यहाँ प्रकाश डाला गया है। ऐसी छात्र प्रतिभाओं को कुचला डालने से देश का भविष्य अंधःकारमय होगा इसपर लेखक ने चिंता व्यक्त की है। बेराजगारी के कारण पस्त होती हुओ छात्र उर्जा, गलत शिक्षा पद्धती, समाज में स्थित गैरकानूनी व्यवसाय, सरकारी तथा पुलिस माहौल में चला भ्रष्टाचार का

सिलसिला, कम मेहनत में जल्द–ही–जल्द अमीर बननेवाले बक्कड जैसे लोगों की आत्मकेंद्रितता, जो खुद के स्वार्थ के लिए अपनी पत्नी को भी दाँव पर लगा सकते हैं, ऐसे कुकर्मी लोगों को उखाड फेंकनेवाली हरिमंगल जैसे साहसियों की शक्ति पर प्रकाश डालना, काशी क्षेत्र में स्थित समस्याओं पर प्रकाश डालना, हिंदी आंदोलन के समर्थन और विरोध को उजागर करना, बेकारी के कारण पस्त होनेवाली युवा शक्ति उर्जा पर सोचना, काशी की जातीय दृढ दिवारों को लचीला बनाना, दलित स्त्रियोंपर आये दिन होनेवाले अत्याचार पर प्रकाश डालना, चरित्रों के अधूरेपन, बडे वास्तविक रुप में प्रस्तुत करना और फिर भी इन पात्रों को अपनी लघुता और निरीहता में महान बनाना, काशी के सांस्कृतिक बोध की विविधता को प्रस्तुत करना, हर वर्ग के पात्र की अपनी–अपनी मान्यताओं पर प्रकाश डालना हासिलवाद की परिधि में घिरे युवा मानसपर सोचना, भारतीय समाज की, नैतिक पस्ती, वैचारिक शून्यता, सांस्कृतिक भावबोध की अवहेलना आदि कओ उद्‌देश्य इस उपन्यास के हैं।

निष्कर्ष –

आजादी के प्राप्त करने के लिए तत्कालिन युवकों ने स्वतंत्रता संग्राम में शरीफ होकर आजादी के लिए बडा योगदान निभाया था परंतु आज के छात्रों ने आजादी के पूर्व के आंदोलनकारिओं के आदर्शों को तोड डाला है। आजादी के बाद बिगडे हुए आदर्शों ने छात्र शक्ति को गुमराह बनाया है। पथभ्रष्ट बनाया है। आज का छात्रआक्रोश और विद्रोही राजनीति कुचक्र में गिरफ्तार है। वह जो कुछ चाहता है, वह करने नहीं देता। एक दिशाहरा की भाँति राजनीतिओं के हाथ कठपुतली बना नाच रहा है। बेकारी और बेराजगारी ने उसकी तल्खी को बढावा दिया है। क्योंकि उनमें चिंतन और व्यवहार का संगठन नही हैं, इसलिए उसकी आवाज दबती जाती है। वे कुछ कर नहीं पाते। शिवप्रसादजी ने उपन्यास के माध्यम से छात्रों के आंदोलनों, समस्याओं और बिखराओं आदि पर प्रकाश डाला है। सामाजिक समस्याओं का निराकरण करके उससे बचने का रास्ता भी दिखाया है। छात्र–वर्ग का सही ढंग से इस्तेमाल करे तो राष्ट्र निर्माण कार्य में हम कामयाब हो सकते हैं यह दिखाना भी इस उपन्यास का उद्‌देश्य हो सकता है। विभिन्न जातियों में और संस्कारों में पले हुए लोग अपने अलग–अलग विचारों से ग्रस्त बनते हैं इस पर भी लेखकने गहराई से सोचा है।

" गली आगे मुडती है " का शिल्पविधान निष्कर्ष

शिवप्रसादजी के "अलग अलग वैतरणी" का विपिन उपन्यास के अंत में करैता छोडकर लखनऊ चला जाता है और "गली आगे मुडती है" का प्रारंभ गाँव से आते हुए रामानंद के काशी प्रवेश से होता है। यह औपन्यासिक शिल्प के प्रति लेखकीय अवधानता का प्रमाण लगता है। प्रस्तुत उपन्यास का रामानंद काशी को छोडकर कहीं नहीं जाता। आलोच्य उपन्यास में रामानंद काशी में बने रहकर उसके जीवन की विविधता की कहानी प्रस्तुत करता है। अतः लगता है कि शिल्प की दृष्टि से "गली आगे मुडती है" यह भी एक आँचलिक उपन्यास है। आँचलिक उपन्यास में संस्कृति का सुरीला संगीत सुनने को मिलता है। सांस्कृतिक जीवन की पहचान ही आँचलिक उपन्यासों का मुख्य स्वर होता है। इस उपन्यास में काशी के सांस्कृतिक ऐश्वर्य को और भाव-बोध को अभिव्यक्त किया गया है। अलग-अलग वैतरणी और "गली आगे मुडती है" शिवप्रसादजी ने दो अलग-अलग शिल्पों का प्रयोग किया है। अलग-अलग वैतरणी में विवरणात्मक शिल्प है तों "गली आगे मुडती है" में कथानक शिल्प है। प्रस्तुत उपन्यास "गली आगे मुडती है" में रामानंद और किरण की अलग-अलग कथाएँ हैं। उपन्यांसके अधिकांश भाग में रामानंद कथा प्रस्तुत करता है। तथा शेषांश में किरण कथा प्रस्तुत करती है। कथात्मक ताकी दृष्टिसे यह शिल्प नियोजन सही लगता है। काशी के सांस्कृतिक बोध में विविधता लक्षित होती है। लगता है एकात्मक सांस्कृतिक बोध के चित्रण के लिए एकात्मक शिल्प बंध का प्रयोग शिवप्रसादजीने करके सांस्कृतिक बोध की विविधता के कारण आलोच्य उपन्यास में बहुसंरचनात्मक शिल्प का प्रयोग करके इस उपन्यास को आठवें दशक की प्रथम पंक्ति के उपन्यासों में स्थान प्राप्त करा दिया है। कथानक एक ही प्रकार का न होकर रामानंद किरण, रज्जो, देबू, प्रोफेसर, सुबोध भट्टाचार्य, हारेमंगल, बक्कड आदि हर पात्र के साथ कथावस्तु की कअी घटनाएँ जुडी हुअी है। कथानक के इस बिखरे हुए खंडित अंशो में से एक कथा बनाने का प्रयत्न करके कथावस्तु की दृष्टि से उपन्यासकार ने एक नया प्रयोग हमारे सामने रखा है। शिवप्रसादजी शिल्पचेता कथाकार लगते है।

पात्रों का <u>चरित्र चित्रण</u> में लेखक ने कमाल की सकलता पायी हुअी लक्षित होता है। इस उपन्यास के पात्र भिन्न – भिन्न समाज के प्रतिनिधी चुने हैं। विभिन्न माहौल और बिरादारियों में बाँटने

के कारण इन पात्रों में संस्कारो में भी और चिंतन में भी विभिन्नता दिखलायी है। सभी पात्र जीने की निजी परिस्थितीयों आदती लगते है। एकांत परिस्थितियों में जीने के आदती में पात्र होते हुए भी आधुनिक विचारप्रणाली ने उनके मन और संस्कार पर बहुत प्रभाव डाला हुआ लक्षित होता है। आलोच्य उपन्यास के पात्र नये भावबोध से ग्रस्त ग्रस्त लगते हैं। स्थितियों के अस्वीकार ने उनके बारे में संदेह पैदा होता है। वे लेखक की वैचारिकता का सहारा ग्रहण करते है। इसी कारण पात्रों के बारे में भ्रम पैदा होता है। येपात्र जीवन के वास्तविक प्रसंगों से आये हैं। इसीसे ये जीवंत एवं वास्तविक बन बैठे है। रामानंद आत्मभीरु और भावुक है। उसका चिंतन और क्रियाकलाप में बडा अंतर दिखाई देता है। जयंती और किरण से वह बेहद जुडा होने पर भी स्वीकार के धरातल पर वह स्थिर नहीं रहता। हरिमंगल अपने साहस को नियंत्रित नहीं बन सकता, रज्जो अपमान को पीती है तो शोभना सुविधा भोगी गृह में से मुक्त होने की छटपटाहट जरुर करती है परंतु अभिष्ट की प्राप्ति में असफल बनती है। आत्मकेंद्रित बक्कड अपने स्वार्थपर मिटता है। इन पात्रों को अधूरापन उनके जीवन की वास्तविकता है। लेखक ने इन पात्रों के अधूरेपन को परिवेश में ढालकर शिल्प की दृष्टि से कमल की सतर्कता दिखाई है। रामानंद में केंद्रिकरण किया गया है। सभी पात्र गलत मोड ले रहे हैं।

सुबोध भट्टाचार्य, रामानंद, देबू, किरण रज्जो आदि के संवाद उनकी मानसिकता तथा स्थिति और गति पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। इन संवादों से इन पात्रो के चारित्रिक पहलुओं पर, संस्कारों पर प्रकाश पडता है। इन संवादों से वातावरण निर्मिति में असलीयत उभर ही है। इन पात्रों के संवादों से उनकी टूटनशीलता, आत्मभीरुता साहसिकता, असाहयता आदि का अच्छा उद्घाटन हो चुका है। इन संवादों के माध्मम से उपन्यासकार ने उद्देश्यपूर्ति तक पहुँचने का प्रयत्न सफलता के साथ किया है। अपने भाव, विचार और अपनी स्थितियों को संवादों के माध्यम से प्रस्तुत करने में पात्र सफल हो चुके है। इन पात्रों के संवाद लेखक के अपने विचारों से आबद्ध लगते है। संवाद भाषण बाजी के कारण लंबे बने है फिर भी इनमें उबकाई न होकर धारावाहिता है। संवाद की दृष्टि से लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में सफलता पाई है। इन संवादों में आंचलिकता भी उभर उठी है।

इस उपन्यास के वातावरण के रुप में केवल काशी का वातावरण चित्रांकित हुआ है फिर भी

एक शहर के विविध आयामों पर आधारित वातावरण बहुलता पूर्ण बन बैठा हैं काशी शहर का, वहाँ की गलियों का, वहाँ के जनजीवन, वहाँ के विश्वविद्यालयों में निर्मित आंदोलनो का भाषा आंदोलन मे हुअी तोडफोड का, गंगा नदी का, वहाँ की सांस्कृतिक विरासत का, ब्राम्हण गुजराती परिवार की स्थितियों का, दलितोंपर हुए अत्याचारों का यथार्थ चित्रण वातावरण के रुप में सफलता के साथ हुआ है। वातावरण निर्मिति में लेखक की सुक्ष्म दृष्टि के दर्शन होते है।

भाषाशैली – विविध भाषिक की दृष्टि से यह उपन्यास सफल है। इसमें कई प्रकार की भाषाओं के मिश्रित रुपों का सुंदर अनुपात हुआ हैं गुजराती युवति किरण अपने परिवार में गुजराती भाषा का प्रयोग करती है तो रामानंद के साथ खडीबोली भाषा में बातचित करती है। रज्जो अपने परिवार में "काशिका" का प्रयोग करती है परंतु रामानंद के साथ खडभ्बोली बोलती है। नाविक "काशिका" भाषा का प्रयोग करता हैं काशी के बुद्धिजीवी वर्ग के युवक खडीबोली और "काशिका" का समयानुकूल संमिश्र प्रयोग करते हैं अतः परिवेश और पात्रों की विशिष्ठता के संप्रेषण में उपन्यास का भाष प्रयोग प्रशसनीय है। उपन्यास की शैली रोचक एवं प्रवाहपूर्ण हैं पढते समय पाठक को अपने रस में बहा लेता है। रामानंद का चित्रण आत्मकथनात्मक शैली से किया है। काशी शहर का चित्रण, आंदोल्नो का चित्रण में वर्णनात्मक शैली का इस्तेमाल किया हैं शैली सरल एवं रोचक होने के कारण उपन्यास सफल बनने में शैली साहयक हुई हैं रोमांटिक प्रसंगो का समावेश होने पर यह शैली परिवर्तित होकर रोमांटिक हुअी है। और मनोभावों को चित्रित कर सकी हैंउद्देश्य की दृष्टि से भी यह उपन्यास सफल लगता है। युवा – आक्रोशकी नाना शक्लें दिखाना, युवा छात्र शक्ति की विविध भंगिमाओं को संपूर्णता के साथ दिखाना, युवा शक्ति में हसिलवाद की प्रवृत्ति का पनपना, काशी शहर के सांस्कृतिक बोध की पहचान कराना, युवा शक्ति की पस्त और कंठित होती जा रही मानसिकतर पर प्रकाश डालना, युवा–शक्ति के बिखरे हुए भावबोध और युवा छात्र शक्ति की सच्ची तस्वीर को उतारना, परिवर्तन की चाह रखकर भी आत्मभीरुता के कारण परिवर्तन के लिए जोखिम न उठानेवाले रामानंद तिवारी जैसे छात्रों पर प्रकाश डालना, अविवेकी साहस के प्रतिनिधी हरिमंगल जैसे छात्रों की प्रवृत्ति पर प्रकाश डालना, युवा–छात्र शक्ति की निरंतर बढती गिरावर, युवा शक्ति कर अराजकता छात्रों की भविष्यत के

प्रति बेहद खीजा हुआ मन छात्र शक्ति की असीम उर्जा जो उज्ज्वल भविष्यत की कामना करती है, अन्यायी और अत्याचारी परिस्थितियों से कैसे आक्रमक और विद्रोही बनती है, इसे प्रस्तुत करना, छात्रों की संकल्प शक्ति को शासन खिलाफ टकराहट को दिखाना, इस संघर्ष में संघर्ष की धार बोथरी होना, छात्रों की अनिश्चयवादी मानसिकता दिखाना, हिंदी राष्ट्रभाषा के प्रति देशवासियों की उपेक्षा को दिखाना, दलित नारियों पर होनेवाले अत्याचारों को दिखाना, बेरोजगारी से पस्त होनेवाली छात्र शक्ति का जिक्र करना, हरिमंगल जैसे साहसी मन की हत्या पर प्रकाश डालना, युवा आक्रोश की निरर्थकता और असंगति को दिखाना, दार्शनिक व्याख्याओं और वैचारिक विविधताओं के माध्यम से सांस्कृतिक परिवेश का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करना आदि अनेक उद्देश्य प्रस्तुत उपन्यास में आये है। "गली आगे मुडती है" में एक पूरी पीढी गलत मोड ले रही है, उसके इस अविवेकी पुष्ट बिखराव को एकाग्र करके उचित जगह मुडाने का उद्देश्य लेखक का लगता है।

हिंदी आंदोलन के समर्थन और विरोध में दिये गये तर्क तथा इन तर्कों से सृजित प्रसंग इनके लंबे बन पडे है, जिससे इस उपन्यास का शिल्प थोडासा दुर्बल बना हुआ महसूस होता है। रामानंद और किरण के प्रसंगो की पुनरावृत्ति के कारण इस उपन्यास का शिल्प थोडासा कमजोर हुआ देखने को मिलता है। इससे उपन्यास की गति में भी थोडासा अवरोध देखने को मिलता है फिर भी इस उपन्यास को शिल्प की दृष्टि से आठवे दशक के उपन्यासों की अग्रणी पंक्ति में बिठलाया जा सकता है।

****

संदर्भ सूची –

1. प्रेमभटनागर, हिंदी उपन्यास शिल्प बदलते परिपेक्ष, रचना प्रकाशन जयपूर प्र. सं. 1968 पृ. 16–17.
2. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा, हिंदी उपन्यासोंका शिल्पविधान, अभय प्रकाशन कानपुर, प्र. सं. 1990 पृ. 49–54.
3. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी देल्ली, व्दि.सं. 1991 पृ.क्र.169.
4. डॉ.प्रदीपकुमार शर्मा, हिंदी उपन्यासोंका शिल्पविधान, अभय प्रकाशन कानपूर, प्र.स. 1990 पृ.60–62.
5. शिवप्रसाद सिंह, "गली आगे मुडती है" राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, व्दि.सं. 1991 पृ.48.
6. वही पृ. 153.
7. डॉ.सत्यदेव त्रिपाठी, शिवप्रसाद सिंह का परवर्ती कथा साहित्य, अमन प्रकाशन, कानपूर प्र.सं.1993 पृ. 28
8. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, व्दि.सं. 1991 पृ.60.
9. वही पृ.91
10. वही पृ.331
11. डॉ.प्रदीपकुमार शर्मा, हिंदी उपन्यासोंका शिल्पविधान, अभय प्रकाशन कानपुर, प्र.सं. 1990, पृ.66–67.
12. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, व्दि.सं. 1991 पृ.30.
13. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, व्दि.सं. 1991 पृ.144.

14. वही पृ. 311
15. वही पृ. 311
16. वही पृ. 681
17. वही पृ. 691
18. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा, हिंदी उपन्यासोंका शिल्प विधान, अभय प्रकाशन, कानपुर प्र. सं. 1990 पृ. 69-711
19. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, व्दि. सं. 1991 पृ. 191
20. ब्रजभूषण सिंह, "आदर्श" हिंदी के राजनीतिक उपन्यासोंका अनुशीलन, 1900-1963 रचना प्रकाशन, इलाहाबाद 1, प्र. सं. 1970 पृ. 486।
21. वही पृ. 487।
22. डॉ. एस्. एन्. गणेशन, हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली व्दि. सं. 1962 पृ. 406।
23. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, व्दि. सं. 1991 पृ. 285।
24. ब्रजभूषण सिंह, "आदर्श" हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशिलन 1900-1963, रचना प्रकाशन इलाहाबाद प्र. सं. 1970 पृ. 493-494
25. डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, शिवप्रसादजी का परवर्ती कथा साहित्य, अमेन प्रकाशन कानपुर प्र. सं. 1993 पृ. 221
26. शिवप्रसाद सिंह, गली आगे मुडती है, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 1991, पृ. 21
27. वही पृ. 346
28. वही पृ. 148
29. वही पृ. 33